स्थापना
अधिवेशन 2

# आधुनिक दिन का राज्य

## आधुनिक दिन का राज्य

परिचय :

इस शिक्षण का उद्धेश्य आपको ''परमेश्वर का राज्य'' के बारे में समझाने में मदद करना है, और मसीह को अपने जीवन मे राजा के रूप में सुशोभित करना है।

किसी ने एक बार ऐसे कहा कि जीवन एक मंच के समान है। यह नायको और खिलाड़ियों से भरा हुआ है जो इतिहास के नाटक को खेल रहे है। तब मंच के केन्द्र में इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व आता है... उसका नाम यीशु मसीह है।

आज पवित्रआत्मा का इस संसार मे काम, मसीह के उपर रोशनी डालना है जैसे ही वह मंच के सामने और केन्द्र में आता है।

यीशु ने इतिहास को बदल दिया और वह आपके जीवन को भी बदलता है :

- यह उसके चमत्कार नहीं हैं जो उसने किए, यद्यपि उसने महान और शक्तिशाली आश्चर्यकर्म किए थे।

- यह उसकी शिक्षांए नहीं जो उसने दी, सद्यपि इनका मूल्य है, निसंदेह उसे संसार का महानतम शिक्षक माना जाता है।

- यह उसके धर्मसिद्धान्त भी नहीं हैं जो उसने प्रचलित किए, यद्यपि उसने नैतिकता और उच्च आचरण भरे जीवन को मानवजाति के सामने रखा जिसे पहले कभी मानव ने नहीं जाना था।

परन्तु यह स्वंय यीशु है! और हमने अपने पिछले अधिवेश्न मे यह देखा कि एक विश्वासी वह है जिसका व्यक्तित्व इस महत्वपूर्ण पुरूष के साथ सम्बंधित है।

## आधुनिक दिन का राज्य

**''सुसमाचार'' नये राज्य का है :**

भविष्यवक्ताओं के द्वारा **भविष्यवाणी की गई**

> *''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्भूत युक्ति करन वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा, उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी को इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''* – यशायाह 6:6–7

स्वर्गदूतों के द्वारा **सूचित किया गया**

> *''क्योंकि तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है''* – लूका 2:11

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **घोषित किया गया**

> *''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है''* –मति 3:2

मसीह के द्वारा **प्रगट किया गया**

> *''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा और लोगों की हर प्रकार की बिमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा''* – मति 4:23

हरेक विश्वासी को **उपलब्ध कराया गया है:**

> *''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''* – कुलुसियों 1:13

याद है हमारी विश्वासी होने की परिभाषा... विश्वासी वह है जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया है, जो उससे प्रेम करता, उस पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करता और प्रभु की तरह उसका आज्ञाकारी है।

समस्या जो हम सब सामना करते हैं वह यह है कि ''मैं न. 1 पर'', ''मै'',''स्वंय का अहम्'', ''हमारा अपने आपा'' हमारे जीवन के सिहांसन पर बैठा है, और उस सिहांसन पर, इससे पहले कि हम विश्वासी हो जांए और यीशु पर उद्धारकर्ता के रूप मे विश्वास करें। हो सकता है मसीह सिहांसन के आसपास ही हो, पर हम स्वंय सिहांसन पर बैठे हो सकते हैं। हमारी इच्छा इस स्थिति को बदलने की चाबी है

एक सच्चा विश्वासी वह है जिसने मसीह को ''मैं'' के स्थान पर रख लिया हो। एक विश्वासी वह है जो ये कहता है,'' यीशु आईये, मैं इस सिहांसन पर बैठने के योग्य नहीं हूं। आप प्रभु हैं! आप सिहांसन पर बैठिए और मैं अपनी जगह आपके चरणों मं लूंगा। आप मेरे जीवन को अब से निर्देशित करें।'' यह वह व्यक्ति है जो एक विश्वासी की योग्यताओं को पूरा करता है।

- कोई शायद हमसें ये कहेगा, ''ठीक है, मैं बाइबल में विश्वास करता हूं, क्या आप नहीं जानते कि मैं एक विश्वासी हूं?''

  और हम उसे ये कहते हैं, ''हो सकता है आप बाइबल में विश्वास करते हों, हो सकता है आपको मसीहत के बारे में जानकारी हो, हो सकता है बाइबल के बारे में भी जानते हों, परन्तु यदि आपने पूरी इच्छा से यीशु को अपने सिहांसन पर नहीं बैठाया तो आप एक विश्वासी होने की योग्यता को पूरा नहीं करते हैं।''

- दूसरा कोई शायद यह कहेगा, ''मुझे याद है जब मैं मसीही सभा में था तो मुझे एक अद्भुत अनुभव हुआ था। मैं उसे इस दिन तक याद करता हूं और ये मुझे मेरे दिल की गहराई तक गर्माहट देता है। मैं आगे गया था और लोगों ने मेरे लिए प्रार्थना की थी, मुझे बड़ा अच्छा लगा था। क्या मैं एक विश्वासी नहीं हूं?''

  आप ऐसा कह सकते है परन्तु यदि आपने अपने जीवन का नियंत्रण यीशु को नहीं सौंपा तो तब मुझे यह कहना होगा ''नहीं''। आपको एक भावनात्मक अनुभव हुआ था। और हो सकता है यह एक अच्छा अनुभव रहा होगा पर आप तब तक एक विश्वासी होने की योग्यता नहीं रखते जब तक आप उसके राज्य में नहीं आ जाते, और यीशु को राजा के रूप में सुशोभित नहीं कर लेते; जब तक आप जीवन को उसे समर्पित नहीं कर लेते और अपने स्थान को उसके साथ नहीं बदल लेते, और उसे अपने जीवन के सिहांसन पर अपनी इच्छा के द्वारा नहीं बैठा लेते।

- और कोई व्यक्ति यह कहेगा, ''ठीक है, देखिए, मैंने अपने जीवन में अच्छी आदतों को अपनाया हुआ है, मैं चर्च जाता हूं, मैं बाइबल पढ़ता हूं, मैं प्रार्थना करता हूं, मैं अच्छा जीवन जीने की कोशिश करता हूं। क्या आप ये कहने की कोशिश कर रहे हैं कि मैं एक विश्वासी नहीं हूं?''

  ''शायद, आप अभी भी विश्वासी नहीं हैं। आप अपनी आदतों के दबाव में उपरोक्त बातों को कर सकते हैं या आप इन सब चीज़ों को इसलिए भी कर सकते हैं कि परमेश्वर के साथ आपका सम्बंध आनन्दमय हो। परन्तु चाबी तो आपकी इच्छा में है यदि आपने अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को अपनी इच्छा के द्वारा यीशु को समर्पित नहीं किया तो सभी उपरोक्त बातें जिन्हे आप करने की कोशिश कर रहें हैं आपको विश्वासी होने की योग्यता नहीं देती हैं क्योंकि इच्छा का समर्पण ही वह स्थान है जहां पर यह सब चीज़ें हैं। जब आप यह कहते हैं''यीशु आंए और मेरे जीवन के सिहासन पर बैठिए, तब आप एक विश्वासी होने की योग्यता प्राप्त करते हैं।''

## आधुनिक दिन का राज्य

**''सुसमाचार'' नये राज्य का है :**

भविष्यवक्ताओं के द्वारा **भविष्यवाणी की गई**

> *''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्‌भूत युक्ति करन वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा, उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी को इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''* — यशायाह 6:6—7

स्वर्गदूतों के द्वारा **सूचित किया गया**

> *''क्योंकि तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है''* — लूका 2:11

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **घोषित किया गया**

> *''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है''* —मति 3:2

मसीह के द्वारा **प्रगट किया गया**

> *''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा और लोगों की हर प्रकार की बिमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा''* — मति 4:23

हरेक विश्वासी को **उपलब्ध कराया गया है:**

> *''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''* — कुलुसियों 1:13

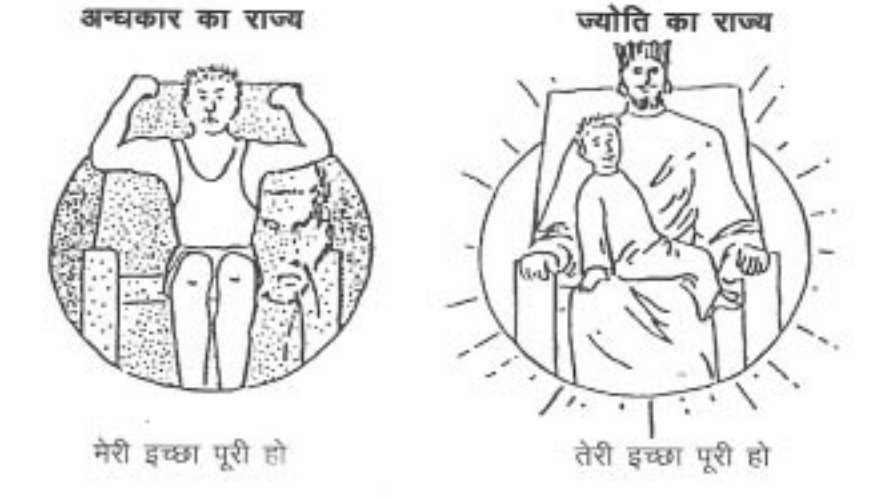

इसलिए एक विश्वासी वह है जो यीशु को प्रेम करता है उसके उद्धारकर्ता होने में विश्वास करता हैं और उसे प्रभु मानकर उसकी आज्ञा पालन करता है, क्योकि बाइबल का शुभ संदेश राज्य का शुभसंदेश है।

इस सदी मैं हमारे लिए, यह आत्मसात करना कठिन होगा कि यह कैसे शुभसंदेश हो सकता है। हम किसी राज्य के अन्दर जीवन व्यतीत नहीं कर रहे। यहां हमारे पास प्रजातंत्र का शासन है। यह किसी राजा का राज्य नहीं है। परन्तु बाइबल यह कहती है कि परमेश्वर ने मानव जाति को जो शुभसंदेश दिया है वह राज्य की स्थापना करना है।

राज्य की घोषणा की गई थी !

पुराने नियम के दिनों में जब यहुदी लोग परमेश्वर की खोज कर रहे थे और उसके पीछे चल रहे थे तब परमेश्वर ने उन्हें बहुत सारे भविष्यवक्ताओं और बहुत सारी भविष्यवाणीयों को दिया । उनमें से यशायाह एक प्रमुख भविष्यदवक्ता है। हम यशायाह के 9 वें अध्याय में उससे और अधिक परिचित हो जाते हैं, धरती पर यीशु के प्रकट होने के हजारों साल पहले यशायाह ने यह कहा,

> ''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है।''
>
> ''और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा''

अब इसको देखिए,

> ''उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा''

अगली आयत यह कहती है कि, ''वह दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''

यहुदी लोग सदीयों से मसीहा के आने की बाट जो रहे थे जो एक राज्य को लाने वाला था। वे एक राजा की बाट जो रहे थे जो 'दाऊद की राजगद्दी पर बैठकर इस संसार पर राज्य करेगा'। इसलिए बहुत सारे यीशु को नहीं पहचान सके क्योंकि वे एक संसारिक राज्य की बाट जो रहे थे क्योंकि भविष्यवाणी ने ये सूचित किया कि एक राजा आएगा और राज्य की स्थापना करेगा।

स्वर्गदूतों के द्वारा सूचित किया गया

आपको याद होगा कि लूका के सुसमाचार में स्वर्गदूतों ने यीशु के जन्म की सूचना दी थी। स्वर्गदूतों ने कहा था कि एक उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है, वह जो मसीह प्रभु है। कोई संदेह नहीं कि यहुदी चरवाहे आनन्द से भर गए थे क्योंकि इन शब्दों ने ऐसा इशारा किया कि मानों जिसकी वह इन्तजार कर रहे थे उसका आज रात में जन्म होने का समय आ गया है। स्वर्गदूतों ने ऐसा ही कहा था! और वह तुम्हारा प्रभु होगा!

## आधुनिक दिन का राज्य

**''सुसमाचार'' नये राज्य का है :**

भविष्यवक्ताओं के द्वारा **भविष्यवाणी की गई**

> *''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्‌भूत युक्ति करन वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा, उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी को इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''* — यशायाह 6:6—7

स्वर्गदूतों के द्वारा **सूचित किया गया**

> *''क्योंकि तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है''* — लूका 2:11

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **घोषित किया गया**

> *''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है''* —मति 3:2

मसीह के द्वारा **प्रगट किया गया**

> *''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा और लोगों की हर प्रकार की बिमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा''* — मति 4:23

हरेक विश्वासी को **उपलब्ध कराया गया है:**

> *''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''* — कुलुसियों 1:13

राज्य यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा घोषित किया गया

जब यहून्ना बपतिस्म देने वाले ने यीशु के आगमन के लिए मंच तैयार करना आरम्भ किया, तब उसके पास एक ही विषय था। ''जिस राज्य की तुम बाट जो रहे थे वो आ पहुचां है!'' पश्चाताप करो और मन फिराओ क्योंकि राज्य आ पहुंचा है। इसी बात की इन्तजार यहूदी लोग सदीयों से कर रहे थे।

राज्य मसीह के द्वारा पूर्ण (प्रगट) किया गया

अनुमान लगांए कि जब यीशु ने प्रचार आरम्भ किया तो उसका संदेश क्या रहा होगा? पहले 6 या 7 महीने, उसके पास एक ही संदेश था, मन फिराओ क्योंकि राज्य निकट है। वह पूरे देश में राज्य की खुशखबरी को प्रचार करता फिरा।

उसने राज्य को प्रदर्शित किया

- उसे इसने पिता की आधिनता में होकर दिखलाया। उसने कहा, ''मेरी केवल एक ही इच्छा है कि मैं अपने पिता की इच्छा पूरी करूं। यही मेरा भोजन और पानी है।'' वह इसलिए नहीं आया कि अपनी इच्छा या अपनी बातों को पूरा करे। वह सिर्फ इसलिए आया कि जैसा पिता उससे चाहता था वैसा ही करे।

उसने परमेश्वर के राज्य का प्रकटीकरण शत्रु को हराकर प्रदर्शित किया :

- उसने बीमारो को चंगा किया
- उसने दुष्टात्माओं को निकाला
- उसने शैतान के कामों को हरा दिया

उसने नये राज्य की सामर्थ को प्रदर्शित किया... नया दर्शन शास्त्र नहीं, नए धर्म की स्थापना भी नहीं। और वह लोगों को चंगा करता फिरा और वह लोगों को प्रचार करता रहा कि, ''राज्य निकट आ पहुंचा है!''

राज्य हर एक विश्वासी को उपलब्ध कराया गया है

कुलुसियों 1:12,13 पढ़ें

> ''और पिता का धन्यवाद करते रहो... उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया...''

मसीह का क्रुस पर मरने का उद्धेश्य शैतान के राज्य की ताकत को तोड़ना था, और ताकि हम उससे छुटकर राज्यों में स्थानांतरित हो सकें। जब एक व्यक्ति विश्वासी बनता है तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह पाप के बन्धन से छूट गया इसलिए अब वह कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है, इसलिए अब वह आत्मनिर्भर है, इसलिए अब वह अपनी आप की सेवा कर सकता है। नहीं, वह अब उस राज्य का हिस्सा नहीं बना रहता बल्कि उसका राज्यों में स्थानातंरण हो जाता है... शैतान के राज्य से मसीह के राज्य में स्थानांतरण; अन्धकार के राज्य से ज्योति के राज्य में स्थानांतरण।

**आधुनिक दिन का राज्य**

**''सुसमाचार'' नये राज्य का है :**

भविष्यवक्ताओं के द्वारा **भविष्यवाणी की गई**

*''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्भूत युक्ति करन वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा, उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी को इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''* – यशायाह 6:6–7

स्वर्गदूतों के द्वारा **सूचित किया गया**

*''क्योंकि तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है''* – लूका 2:11

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **घोषित किया गया**

*''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है''* –मति 3:2

मसीह के द्वारा **प्रगट किया गया**

*''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा और लोगों की हर प्रकार की बिमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा''* – मति 4:23

हरेक विश्वासी को **उपलब्ध कराया गया है:**

*''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''* – कुलुसियों 1:13

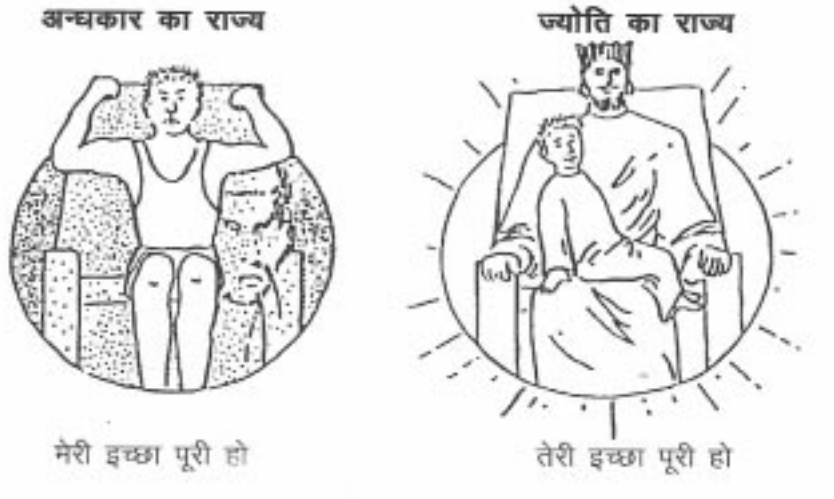

अब आप प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के नीचे के चित्रों पर ध्यान दें। अन्धकार का राज्य. ... सिहांसन पर स्वंय की इच्छा बैठी हुई कह रही है, ''मेरी इच्छा पूरी हो।'' ज्योति का राज्य... यीशु सिहांसन पर बैठा है और हम उसकी आराधना कर रहे हैं और इस राज्य का कुंजी शब्द, ''तेरी इच्छा पूरी हो!''... मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो।

अन्धकार के राज्य में उलझन है, द्वंद्व इन्त्जार कर रहें हैं। जब यीशु यह कहता है कि, ''मेरी इच्छा पूरी करो'', और हम कहते हैं कि, ''नहीं, मैं अपनी इच्छा पूरी करूंगा।''

पर ज्योति के राज्य में जब राजा यह कहता है कि, ''मेरी इच्छा पूरी करो।'' और हम कहते हैं कि, ''तेरी इच्छा पूरी हो जिसे मैं करना चाहता हूं'', तब वहां पर शांति आनन्द और अनुशासन होता है।

इसलिए यीशु का इस संसार में आने का संदर्भ राज्य के संदर्भ से है। एक नये शासन का आरम्भ इस धरती पर हो रहा था, और लोग कई सदीयों के बाद इसमें भागी होने जा रहे थे, ओर वह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के शासन में आने वाले थे।

**आधुनिक दिन का राज्य**

**''सुसमाचार'' नये राज्य का है :**

भविष्यवक्ताओं के द्वारा **भविष्यवाणी की गई**

> *''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम अद्‌भूत युक्ति करन वाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा, उसकी प्रभुता सर्वदा की बढ़ती जाएगी और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी को इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा''* – यशायाह 6:6–7

स्वर्गदूतों के द्वारा **सूचित किया गया**

> *''क्योंकि तुम्हारे लिए दाऊद के शहर में एक उद्धारकर्ता पैदा हुआ है, जो मसीह प्रभु है''* – लूका 2:11

यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा **घोषित किया गया**

> *''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है''* –मति 3:2

मसीह के द्वारा **प्रगट किया गया**

> *''और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा और लोगों की हर प्रकार की बिमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा''* – मति 4:23

हरेक विश्वासी को **उपलब्ध कराया गया है:**

> *''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''* – कुलुसियों 1:13

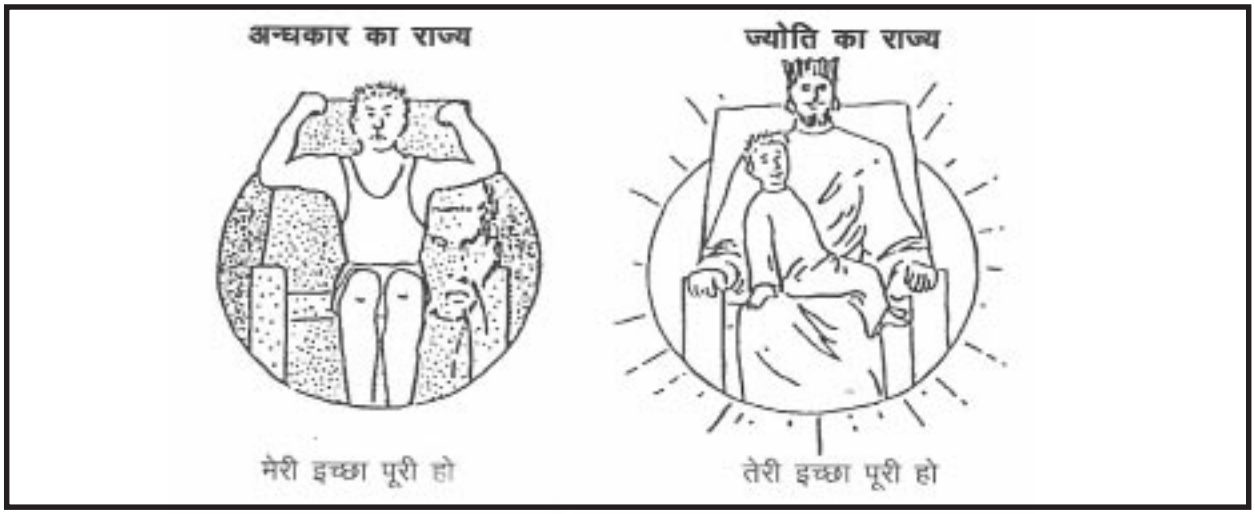

अब मैं आपको पवित्रशास्त्र से यह दिखलाना चाहता हूं कि यीशु ही इस नए राज्य का नया शासक है। सबसे पहले स्थान पर, यीशु को शासक होने के नाते इस बात का अधिकार है कि वह राज्य का राजा है क्योंकि वह इसका **<u>सृष्टिकर्ता</u>** है।

कुलुसियों 1:15—16 ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई...''

बहुत से लोग अहसास नहीं करते हैं कि यही यीशु जो मनुष्य बना और इस धरती पर कुछ समय तक रहा परमेश्वर का पुत्र था।

- अब ये परमेश्वरिए मनुष्य : यीशु, जो यह कहता है कि वह हमसे यह चाहता है कि हम उसे अपने जीवन का राजा होने दें, शाब्दिक रूप से वही है जिसने हर एक वस्तु की रचना की है। यहून्ना 1 कहता है कि, ''उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।''

- आप आकाश के तारागणों को देख सकते है, चारों ओर की प्रकृति को देख सकते हैं, इन सबके पीछे यीशु, ब्रह्माण्ड का रचनाकार खड़ा है।

यही केवल नहीं, परन्तु अगला पद कुलुसियों 1:17 ऐसे कहता है... ''और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।''

- वह अपने शब्द की सामर्थ से सब कुछ स्थिर रखता है।

- सभी तरह के परमाणु, सभी तरहे के अणु... क्यों एक साथ इक्ट्ठें रहते हैं। ऐसी कौन सी शक्ति है जो इन्हें एक दूसरे के प्रति आकर्षित करती है? यह शक्ति प्रभु यीशु की ओर से आती है, क्योंकि यह उसके शब्द की सामर्थ है, जो सब चीज़ों को एक दूसरे से अलग होने से रोके रखती है।

- विज्ञान इस पर चकित होता है... वो इसे नहीं समझ पाते हैं परन्तु वे इसे देखते हैं।

- क्यों आकाश में आकाशगंगा उड़ नहीं जाती?

- क्यों गुरूत्व का नियम जैसे काम करना चहिए वैसे ही काम करता है?

- क्यों वातावरण में लगातार सही रसायनिक संतुलन बना रहता है ताकि हम सांस ले सकें?

- क्यों समुद्र में एक तरह का रसायनिक संतुलन बना हुआ है जबकि वहा मछलियां हैं?

- कैसे सभी तरह के जीवन, प्रकृति की सभी तंत्र प्रणालीयां कायम रहते हैं।

- ऐसा क्यों हैं कि सब कुछ अनुशासन में है

यह इसलिए है क्योंकि यीशु दूसरे स्थान पर सब चीज़ों को **<u>सम्भाले रखता है</u>**। वह अपने शब्द की सामर्थ के द्वारा सभी वस्तुओं को सम्भाले रखता है।

**यीशु इस राज्य का सही शासक है क्योंकि वहः**

**– सृष्टिकर्ता** .................................................................................................है

*''क्योकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानतांए, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई''*– कुलुसियों 1:16 (यहून्ना 1:3, 10 भी देखिए)

**– स्थिर रखने वाला** .................................................................................................है

*''वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सभी वस्तुए उसी में स्थिर रहती हैं''–* (कुलुसियों 1:17)

**– अन्तिम अधिकारी** .................................................................................................है

*''और उन दीवारों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष देखा जो पावों तब का वस्त्र पहने और छाती पर सुनेहरा पटुका बांधे हुए था, उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के से उज्जवल थे और उसकी आंखे आग की ज्वाला की नाई थी, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था, और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी और उसका मुंह ऐसा प्रज्जवलित था जैसा सुर्य कड़ी घूप के समय चमकता है, जब मैंने उसे देखा तो उसके पैरों पर मर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, कि मत डर मैं युगानुयुग जीवता हूं और मृत्यु और अधोलोक की कुजियां मेरे ही पास हैं''* प्रकाशितवाक्य 1:13–18

**नए नियम का बड़ा संदेश :**

**यीशु प्रभु हैं**

———————————————————————————

केवल यही नहीं कि यीशु ''**उद्धारकर्ता** '' हैं परन्तु यीशु **''प्रभु''** भी है।

बाइबल में है –

''उद्धारकर्ता'' ——————————————— बार आया है

''प्रभु'' ————————————————— बार आया है

**प्रभुत्व** के बिना **उद्धार**

''आधा सुसमाचार है''

पर इतना ही नहीं.....

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं कि यीशु **सर्वाधिकारी** भी है

यहून्ना ने प्रकाशित वाक्य उस समय लिखा जब वह पतमुस टापु पर वह बंधुवाई में था। यहुन्ना प्रभु के दिन में आराधना कर रहा था। उसने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनी, ''मैं अल्फा और ओमेगा हूं, आदि और अन्त हूं।''

पढ़िये प्र. वाक्य 1:13—18

यहुन्ना ने जो उसके सामने खड़ा था **उसकी** वैभवता को पहचान लिया। यीशु ने कहा, ''मत डर मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं। मैं वो हूं जिसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुजिंया हैं। मैं हमेशा के लिए जीवित हूं। मैं ही वही हूं पर तुझे डरने की जरूरत नहीं है।''

यहून्ना ने जीवित यीशु को देखा, पिता के दाहिने हाथ में एक बार फिर महिमामय रूप में जैसा वह अब है। यदि हम उसे वैसे देखते हैं जैसे यहून्ना ने देखा ब्रह्माण्ड के शासक के रूप में, यीशु को राजा के रूप में, प्रभुओं के प्रभु के रूप में आप क्या सोचते हो क्या हुआ होगा? आप भी यहुन्ना के समान धरती पर मुहं के बल गिर पडेंगे। आप के घुटने मोम के समान पिघल पड़ेंगे। यह बहुत ही वैभव शाली होगा। क्योंकि वह ऐसा ही है... ब्रह्माण्ड का परमेश्वर, राजा, सृष्टिकर्ता ओर वह जो यह कहता है कि, ''आओ मुझे अपने जीवन के सिहांसन पर बैठने दो ताकि मैं तुम्हारा प्रभु हो जाऊं!''

यहां पर यह प्रश्न नहीं है कि वह हमसे ये क्यों न कहे, कि वह प्रभु है।

**यीशु इस राज्य का सही शासक है क्योंकि वहः**

**– सृष्टिकर्ता** ........................................................................................................ है

*''क्योकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानतांए, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गईं''*– कुलुसियों 1:16 (यहून्ना 1:3, 10 भी देखिए)

**– स्थिर रखने वाला**
........................................................................................................ है
*''वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सभी वस्तुए उसी में स्थिर रहती हैं''*– (कुलुसियों 1:17)

**– अन्तिम अधिकारी** ........................................................................................................ है

*''और उन दीवारों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष देखा जो पावों तब का वस्त्र पहने और छाती पर सुनेहरा पटुका बांधे हुए था, उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के से उज्जवल थे और उसकी आंखे आग की ज्वाला की नाई थी, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था, और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी और उसका मुंह ऐसा प्रज्जवलित था जैसा सुर्य कड़ी घूप के समय चमकता है, जब मैंने उसे देखा तो उसके पैरों पर मर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, कि मत डर मैं युगानुयुग जीवता हूं और मृत्यु और अधोलोक की कुजियां मेरे ही पास हैं''* प्रकाशितवाक्य 1:13–18

**नए नियम का बड़ा संदेश :**

**यीशु प्रभु हैं**

---

केवल यही नहीं कि यीशु ''**उद्धारकर्ता** '' हैं परन्तु यीशु **''प्रभु''** भी है।

बाइबल में है –

''उद्धारकर्ता'' ———————————— बार आया है

''प्रभु'' ———————————— बार आया है

**प्रभुत्व** ——————— के बिना **उद्धार** ———————
''आधा सुसमाचार है''

इसलिए नये नियम का बड़ा संदेश साधारण शब्दों में यह है..., ''**<u>यीशु प्रभु है!</u>**''

अब इस पर ध्यान दे... वह न केवल उद्धारकर्ता है, परन्तु प्रभु भी है।

- बाइबल में उद्धारकर्ता शब्द **<u>37</u>** बार आया है। हमें आनन्द है कि वह हमारा उद्धारकर्ता है।

- परन्तु प्रभु शब्द **<u>7,736</u>** बार आया है।

- आपको इस बात की समझ प्राप्त होगी कि मसीह के प्रभुत्व का अर्थ ब्रह्माण्ड के परमेश्वर जितना ही महत्वपूर्ण है जब आप इस बात का अहसास करते है कि उसे ''प्रभु'' के रूप में 7000 से अधिक बार सूचित किया गया है।

- **<u>प्रभुता</u>** के बिना **<u>उद्धार</u>** आधा सुसमाचार है।

मुझे याद है एक औरत रोती हुई मेरे पास आई। वह अपने पति के बारे में चिंतित थी। परमेश्वर ने उससे विशेष तरीके से मुलाकात की थी। उसके पति ने इसका प्रत्युतर चर्च में कुछ समय आने के द्वारा दिया था पर फिर उसने चर्च आना छोड़ दिया। उसकी पत्नी हैरान थी कि क्या उसके पति ने कभी उद्धार पाया था। उसके पति को एक अद्‌भुत अनुभव हुआ था, परन्तु वह परमेश्वर को अपनी शर्तों के मुताबिक चाहता था वह नहीं चाहता था कि यीशु उसके जीवन में राज्य करे। जब उसके जीवन में हलचल मची, जैसा वह चाहता था वैसा नहीं हुआ, तब वह खट्‌टास से भर गया क्योंकि यीशु उसका प्रभु नहीं था।

आधे सुसमाचार का बहुत सी चर्चों में प्रचार किया जाता है। परन्तु आधा सुसमाचार स्वंय केन्द्रित अनुभव को पैदा करता है। बहुत से लोग चर्च नियमित रूप से जाते हैं, शायद वे उद्धार पाए हुए हों (परमेश्वर ही जानता है) परन्तु उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है यीशु ने उन्हें किसलिए बचाया है।

आधे बचे हुए विश्वासी यह पूछते हुए चले जाते हैं ''यीशु मेरे लिए क्या कर सकता है?'' जबकि सही प्रश्न यह है, ''यीशु मुझे क्या कह रहा है कि मैं उसके लिए करूं?''... वह प्रभु है। वह ब्रह्माण्ड का केन्द्र है... मैं नहीं।

**यीशु इस राज्य का सही शासक है क्योंकि वहः**

**– सृष्टिकर्ता** .................................................................................................. है

*''क्योकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानतांए, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई''*– कुलुसियों 1:16 (यहून्ना 1:3, 10 भी देखिए)

**– स्थिर रखने वाला** .................................................................................................. है

*''वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सभी वस्तुए उसी में स्थिर रहती हैं''*– (कुलुसियों 1:17)

**– अन्तिम अधिकारी** .................................................................................................. है

*''और उन दीवारों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष देखा जो पावों तब का वस्त्र पहने और छाती पर सुनेहरा पटुका बांधे हुए था, उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के से उज्जवल थे और उसकी आंखे आग की ज्वाला की नाई थी, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था, और वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी और उसका मुंह ऐसा प्रज्जवलित था जैसा सुर्य कड़ी घूप के समय चमकता है, जब मैंने उसे देखा तो उसके पैरों पर मर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, कि मत डर मैं युगानुयुग जीवता हूं और मृत्यु और अधोलोक की कुजियां मेरे ही पास हैं''* प्रकाशितवाक्य 1:13–18

**नए नियम का बड़ा संदेश :**

**यीशु प्रभु हैं**

———————————————————————————

केवल यही नहीं कि यीशु ''**उद्धारकर्ता** '' हैं परन्तु यीशु **''प्रभु''** भी है।

बाइबल में है –

''उद्धारकर्ता'' —————————————— बार आया है

''प्रभु'' —————————————— बार आया है

**प्रभुत्व** के बिना **उद्धार**

''आधा सुसमाचार है''

''आधे सुसमाचार'' का बहुत सी चर्चों में प्रचार किया जाता है। परन्तु आधा सुसमाचार स्वंय केन्द्रित अनुभव को पैदा करता है। बहुत से लोग चर्च नियमित रूप से जाते हैं, शायद वे उद्धार पाए हुए हों (परमेश्वर ही जाानता है) परन्तु उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है यीशु ने उन्हें किसलिए बचाया है।

आधे बचे हुए विश्वासी यह पूछते हुए चले जाते हैं ''यीशु मेरे लिए क्या कर सकता है?'' जबकि सही प्रश्न यह है, ''यीशु मुझे क्या कह रहा है कि मैं उसके लिए करूं?''. .. वह प्रभु है। वह ब्रह्माण्ड का केन्द्र है...मैं नहीं।

प्रमाणिक सुसमाचार वह है जो यह कहता है, ''यीशु के पास आंए और दें... आपका जीवन उनके नियत्रंण में, अपने आपको जीवित बलिदान स्वरूप, पहले उसके राज्य की खोज करो तो सब वस्तुंए मिल जांएगी।''

आधा सुसमाचार, वास्तव में एक नकली सुसमाचार है जो यह कहता है, ''यीशु के पास आंए और प्राप्त करें... वह आपको चंगा करेगा, वह आपको आनन्द, शांति, सम्पन्नता, उत्तेजना और आशिष देगा।

अब मैं आपसे यह कहता हुं कि यीशु इन सब चीज़ों को हमारे लिए करना चाहता है। परन्तु जब हम अपने आप को उसे दे देते हैं और उसे अपने जीवन में सही स्थान पर रख लेते हैं तो यह सब चीजें उसे प्रभु होने का कारण ठहरती है।

नकली सुसमाचार कहता है कि मैं स्वयम् प्रभु हूं और यीशु मेरा सेवक है। जो कुछ मैं चाहता हूं वह मेरे लिए करेगा। यह सच्चा सुसमाचार नहीं है। प्रमाणिक सुसमाचार हमें यह शिक्षा देता है कि, ''यीशु मेरा प्रभु है मैं उसका सेवक हूं। जो कुछ वह मुझसे चाहता है मैं करूंगा।''

**हमारे शुभ संदेश का सूची पत्र मसीह को ग्रहण करने वालो के गुण को निर्धारित करता हैं!**

''आधा सुसमाचार'' **''स्वंय केन्द्रित''** धार्मिक अनुभव पैदा करता है।

आधे बचाऐ हुए विश्वासी जीवन में लगातार कहते रहते हैं *''यीशु मेरे लिए क्या कर सकता है?''* पर असल प्रश्न वास्तव में ये है, ''यीशु मुझ से क्या कह रहा है कि मैं उसके लिए करूं''?

| **''प्रमाणिक सुसमाचार''** | **बनाम** | **''आधा सुसमाचार''** |
|---|---|---|
| क. यीशु के पास आता और **देता** है<br>– अपना जीवन उसके नियन्त्रण में<br>– अपने आप को जीवित बलिदान स्वरूप<br>– पहले उसके राज्य की खोज करो तो **सब** वस्तुएं मिल जांएगी। | | क. यीशु के पास आता और **पाता** है<br>– चंगाई पाया<br>– आनन्द और शान्ति<br>– सम्पन्नता, उत्तेजना,<br>– आशिष |
| ख. यीशु प्रभु है<br>– मैं उसका सेवक हूं | | ख. मैं प्रभु हूं<br>– यीशु मेरा सेवक है |

**हम असल में उस समय ''बचाए'' जाते हैं**
**जब केवल यीशु को अपना प्रभु बनाते हैं**

...यदि तुम मुंह से अंगिकार करो कि यीशु ही प्रभु है और अपने हृदय में ये विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तुम बचाए जाओगे – रोमियों 10:9

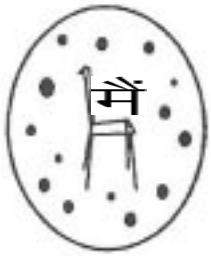

यीशु हमें **मैं (स्वंयम्)** ———— से बचाता है।

जैसे ही हम उसे अपना **प्रभु** ——— बनाते हैं।

स्वयंम् सिहांसन पर  मसीह सिहांसन पर

*यदि हम वास्तव में समझ लें कि एक विश्वासी होना क्या होता है तो तब यह मसीह, जीवित परमेश्वर वास्तव में हमारे जीवन पर राज्य करने आता है तब सब कुछ बदल जाना चाहिए : मूल्य, उद्धेश्य, प्राथमिकताऐं, इच्छाऐं और आदतें। यदि मसीह की प्रभुता हमारे प्रभुत्व में बाधा नहीं डालती है तो हमारे जीवन परिवर्तन पर वास्तव में प्रश्न किया जाना चाहिए।*

चार्ल्स काल्स

**''एक विश्वासी यीशु को प्रभु मानकर आज्ञा पालन करता है''!**

अब हमें इस बात को जानने कि जरूरत है..... कि हम केवल तभी सच में बचाए जाते हैं जब यीशु को अपना प्रभु मानते है।

रोमियों 10:9 को बोलिए... ''यदि तुम मुंह से अंगिकार करो कि यीशु ही प्रभु है और अपने हृदय में ये विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तुम बचाए जाओगे।''

यहुदी एक शासक के आने की बाट जो रहे थे। हम एक उद्धारकर्ता की बाट जो रहे हैं। हम दोनों ही सही है। परन्तु जिस बात को हम खो देते है वह यह है कि वह अपने शासन के द्वारा हमें बचाता है।

बहुत लोग उद्धार को आधारमय रूप से ऐसा देखते हैं मानों नरक की आग से बच जाना है। परमेश्वर हमें बचाता है। परन्तु उसका उद्धेश्य और इरादा नरक की आग से बचाना ही नहीं बल्कि हमें सभी तरह के पाप से, सभी तरह की हानि से, सभी तरह की बुराई से, सभी तरह की हताशा से, सभी तरह की स्वंयम् की इच्छा से, सभी तरह के अन्धकार से, और लोग उन बातो से जिनके द्वारा हमारे जीवन में उसकी इच्छाऐं और योजनाओं हमारे जीवन में रूकावट पड़ी है से बचाना है।
वह ऐसा कैसे करता है? वह हमें यीशु के प्रभुत्व में लाकर करता है।

प्रशिक्षण पुस्तिका के चित्र को देखें। पहले घेरे के अन्दर... हमारे द्वारा स्वंय शासित जीवन के सभी तत्व उलझन में हैं और असंतुलित हैं। दूसरे घेरे में जहां यीशु हमारा प्रभु है, वहां अनुशासन है, क्योंकि यीशु वहां शासन कर रहा है। यीशु हमें स्वंयम् से बचाता है जब हम उसे प्रभु करके मान लेते हैं जब हम उसे अपने जीवन का अधिकार प्रभु होने के नाते दे देते हैं तब वह हमें सभी तरह की उलझन जो हमारे स्वंयम् के द्वारा नियंत्रित जीवन के द्वारा पैदा की गई थी से बचाता है।

फिलि. 3:12... ''अब हम वो बन सकते हैं जिसकी परमेश्वर हमसे चाहत रखता है...''

जब तक हम यीशु को राजा न बना लें तब तक हमारे जीवन में शांति और आनन्द नहीं आ सकता। जब वह हमारा प्रभु बन जाता है तब हमारा पूरा जीवन सही अनुशासन में आ जाता है। जब हम उसको अंगीकार कर लेते हैं और उसे अपना प्रभु सुशोभित कर लेते है, तब वह हमें पुनः स्थापित करता है और हमारे जीवन में परमेंश्वर की योजनाओं को लागू करता है।

प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के नीचे चार्ल्स काल्स के संदर्भ को देखें।

एक विश्वासी यीशु मसीह की प्रभु के रूप में आज्ञा पालन करता है... ऐसा नहीं कि कोई स्वर्ग में बैठा है, परन्तु ऐसा कि वह यहां हमारे बीच में है।

''आधा सुसमाचार'' **''स्वंय केन्द्रित''** धार्मिक अनुभव पैदा करता है।

आधे बचाऐ हुए विश्वासी जीवन में लगातार कहते रहते हैं *''यीशु मेरे लिए क्या कर सकता है?''* पर असल प्रश्न वास्तव में ये है, ''यीशु मुझ से क्या कह रहा है कि मैं उसके लिए करूं''?

| **''प्रमाणिक सुसमाचार''** | **बनाम** | **''आधा सुसमाचार''** |
|---|---|---|
| क. यीशु के पास आता और **देता** है<br>– अपना जीवन उसके नियन्त्रण में<br>– अपने आप को जीवित बलिदान स्वरूप<br>– पहले उसके राज्य की खोज करो तो **सब** वस्तुएं मिल जांएगी। | | क. यीशु के पास आता और **पाता** है<br>– चंगाई पाया<br>– आनन्द और शान्ति<br>– सम्पन्नता, उत्तेजना,<br>– आशिष |
| ख. यीशु प्रभु है<br>– मैं उसका सेवक हूं | | ख. मैं प्रभु हूं<br>– यीशु मेरा सेवक है |

**हम असल में उस समय ''बचाए'' जाते हैं**
**जब केवल यीशु को अपना प्रभु बनाते हैं**

...यदि तुम मुंह से अंगिकार करो कि यीशु ही प्रभु है और अपने हृदय में ये विश्वास करो कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तुम बचाए जाओगे – रोमियों 10:9

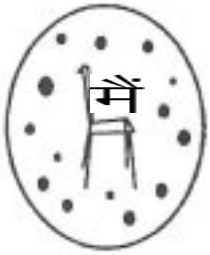

यीशु हमें **मैं (स्वंयम्)** ———— से बचाता है।

जैसे ही हम उसे अपना **प्रभु** ——— बनाते हैं।

स्वयंम् सिहांसन पर मसीह सिहांसन पर

*यदि हम वास्तव में समझ लें कि एक विश्वासी होना क्या होता है तो तब यह मसीह, जीवित परमेश्वर वास्तव में हमारे जीवन पर राज्य करने आता है तब सब कुछ बदल जाना चाहिए : मूल्य, उद्धेश्य, प्राथमिकताऐं, इच्छाऐं और आदतें। यदि मसीह की प्रभुता हमारे प्रभुत्व में बाधा नहीं डालती है तो हमारे जीवन परिवर्तन पर वास्तव में प्रश्न किया जाना चाहिए।*

चार्ल्स काल्स

**''एक विश्वासी यीशु को प्रभु मानकर आज्ञा पालन करता है''!**

अब हम परमेश्वर के राज्य की परिभाषा को जानने को तैयार हैं ।

परमेश्वर का राज्य उन सभों को मिलाकर बनता है जो मृत्यु के इस पार या उस पार हैं, जो परमेश्वर की सरकार के आधीन पंजीकृत हुए हैं क्योंकि उन्होंने अपना प्रभु यीशु को माना है।

प्रभु के लिए युनानी भाषा का शब्द **कुरिओस** है

- इसका अर्थ है सम्पूर्ण अधिकार, सर्वोच्च नियंत्रण करने वाला।
- वह व्यक्ति जिसे हम अपना सम्पूर्ण अधिकार और सम्पूर्ण नियत्रंण दे देते हैं।

''प्रभुत्व'' को आत्मसात करना उन लोगों के लिए कठिन होता है जो प्रजातंत्र में रहते हैं

- संसार के कुछ स्थानों में लोग आसानी से एक राजा या शासक के आधीन हो जाते हैं उसको उन पर पूरा अधिकार होता है और उसके आदेश को कोई नहीं टाल सकता।
- परन्तु जहां कहीं प्रजातंत्र है वहां हरेक व्यक्ति को बोलने का अधिकार है। जो कोई कुछ करना चाहे कर सकता है ऐसे में उनको एक शासक के आधीन होना कठिनाई जान पड़ता है।

एक विश्वासी अब परमेश्वर के राज्य का नागरिक है क्योंकि यह केवल मसीह के और जो कुछ मसीह ने उसके लिए किया है के कारण है, इसलिए वह अपनी इच्छा से यीशु को अपने ऊपर सम्पूर्ण अधिकार और सम्पूर्ण नियत्रंण दे दते हैं।

इसलिए जब हम इस बात की घोषणा करते हैं कि, ''यीशु हमारा प्रभु है'' तो यह धार्मिक सामान्य विवरण नहीं है।

- इसका अर्थ होता है उसके सम्पूर्ण अधिकार के आधीन हो जाना।
- इसका अर्थ होता है हमारी अपनी शर्तों पर जीवन का अन्त।

**परिभाषाः परमेश्वर का राज्य :** उन सबों को मिलाकर बनता है जो चाहे मृत्यु के इस पार हों या व उस पार हों जो परमेश्वर के राज्य के अनुसार ठहराए गए हैं क्योंकि उन्होंने यीशु को अपना प्रभु मान लिया है।

''प्रभु'' के लिए युनानी शब्द =

**''कुरिओस''**

पूर्ण अधिकार
सर्वोच्च नियंत्रण करने वाला

तो यीशु को प्रभु करके धोषित करना धार्मिक सामान्य विवरण नहीं है। यह उसके सर्वोच्च अधिकार के प्रति न झुकने वाले रिशते को बतलाना है। यह इस बात का संकेत करता है कि –

**अपनी शर्तों पर जीवन का अन्त करना**

**लूका 6 : 23–26**

1. (पद 23) **स्वंयम् का इन्कार**

*''यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे तो अपने आपे का इन्कार करे ओर अपना क्रुस उठाकर मेरे पीछे हो ले''*

''नहीं, प्रभु'' परस्पर विरोधी है

2. ( पद 24) **सम्पूर्ण समर्पण**

*''...जो अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो उसे मेरी खातिर दे देगा वह उसे बचाएगा''।*

जवान धनी सरदार – लूका 18:18–23

हर एक बात जिसकी प्रतिर्स्पधा होती है, को चले जाना चाहिए! चाहे यह आधे समय की नौकरी, मित्रता, एक आदत, एक तरह की जीवन शैली या हमारी इच्छा की कोई चीज़ ही क्यों न हो जो हमारे सम्पूर्ण समर्पण पर दखल डालती है।

3. (पद 26) **जन घोषणा**

*''जो मुझसे और मेरे वचन से शर्माता है तो जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा उससे, अपने पिता और स्वर्ग दूतों के सामने शर्माएगा''* – (देखिए मत्ती 10:32–33)

यीशु वह व्यक्ति है जो उन लोगों के लिए शर्तों को निर्धारित करता है जो उसके पीछे चलते हैं और उसे अपना प्रभु करके मानते हैं। लूका 9:23–26 आईये हम इन पदों को पढ़ लें ।

यीशु के बहुत सारे वचन कठिन वचन थे क्योंकि यीशु हमें एक धर्म देने के लिए नही आया था ताकि हम उसके साथ खेल सकें। वह हमारें जीवन मं सम्पूर्ण क्रांति के लिए आया था। और इसलिए जब उसने लोंगों को अपने पास बुलाया तो उन शर्तों पर बुलाया जिनमें बहुत सारी मांगें थी....

इन पदों मे यीशु तीन (3) विभिन्न शर्तों को रख देते हैं।

यदि कोई यीशु को प्रभु बनाता है तो उसे स्वंयम् का इन्कार करना पड़ता है!

- पुराने स्वंयम् को जाना होगा।
- उसने कहा **<u>अपने आपे का इन्कार</u>** करो अपना नहीं।
- कुछ अपना इन्कार करते हैं... चाकलेट खाना छोड़ देना, घुम्रपान छोड़ देना आदि।
- परन्तु यीशु के कहने का अर्थ था कि हम अपने स्वंय की इच्छा का इन्कार करें।
- असल में उसने कहा कि आप अपना क्रुस उठा लें
  - — गहनों को नहीं आभूषणों का नहीं परन्तु मृत्यु का
  - — इसका अर्थ एक निर्दयी मृत्यु से था
  - — यीशु मसीह हमारी मृत्यु के द्वारा जिस चित्रण को हममें करने की कोशिश कर रहे है। वह हमारे ''स्वंय'' की मृत्यु से है।
  - — अपने आपे का इन्कार करना और अपने क्रुस को उठा लेने का अर्थ होता है कि हम ''रोजाना'' अपने आपे के लिए मरें।
  - — पौलुस बाद मे इस बात की धोषणा करता है, ''मैं मसीह के साथ क्रुस पर चढ़ाया गया, तौभी मैं जीवित हूं.....''

इस सबका असल में क्या अर्थ है जब वह हमारा प्रभु हो जाता है। यह हमारे लिए पूर्ण विरोधाभास की बात है कि हम यह उससे कहें, ''नहीं, प्रभु।''

जब यीशु मसीह हमारा प्रभु बन जाता है तो उससे ''नहीं'' कहने का अर्थ है कि वह वास्तव में हमारा प्रभु नहीं है।

- यीशु कहता है कि अपने माता — पिता का आज्ञा पालन कर.... हम कहते हैं,'' परन्तु प्रभु आप मेरे माता — पिता को नहीं जानते हैं।''
- यीशु कहता है किसी को क्षमा करने के लिए, हम कहते हैं, ''परन्तु प्रभु आप नही जानते उन्होंने मेरे साथ क्या किया।''

यीशु क्रुस उठाने के लिए और उसके पीछे हो लेने के लिए बुला रहा है। अपने रास्तों के लिए मर जांए और उसके रास्ते पर चल पड़ें।

**परिभाषाः परमेश्वर का राज्य :** उन सबों को मिलाकर बनता है जो चाहे मृत्यु के इस पार हों या व उस पार हों जो परमेश्वर के राज्य के अनुसार ठहराए गए हैं क्योंकि उन्होंने यीशु को अपना प्रभु मान लिया है।

''प्रभु'' के लिए युनानी शब्द =

**''कुरिओस''**

पूर्ण अधिकार
सर्वोच्च नियंत्रण करने वाला

तो यीशु को प्रभु करके धोषित करना धार्मिक सामान्य विवरण नहीं है। यह उसके सर्वोच्च अधिकार के प्रति न झुकने वाले रिशते को बतलाना है। यह इस बात का संकेत करता है कि –

**अपनी शर्तों पर जीवन का अन्त करना**

**लूका 6 : 23–26**

1. (पद 23) **स्वंयम् का इन्कार**

*''यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे तो अपने आपे का इन्कार करे ओर अपना क्रुस उठाकर मेरे पीछे हो ले''*

''नहीं, प्रभु'' परस्पर विरोधी है

2. ( पद 24) **सम्पूर्ण समर्पण**

*''...जो अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो उसे मेरी खातिर दे देगा वह उसे बचाएगा''।*

जवान धनी सरदार – लूका 18:18–23

हर एक बात जिसकी प्रतिर्स्पधा होती है, को चले जाना चाहिए! चाहे यह आधे समय की नौकरी, मित्रता, एक आदत, एक तरह की जीवन शैली या हमारी इच्छा की कोई चीज़ ही क्यों न हो जो हमारे सम्पूर्ण समर्पण पर दखल डालती है।

3. (पद 26) **जन घोषणा**

*''जो मुझसे और मेरे वचन से शर्माता है तो जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा उससे, अपने पिता और स्वर्ग दूतों के सामने शर्माएगा''* – (देखिए मत्ती 10:32–33)

पद 24 में यीशु दर्शाता है कि यह **<u>सम्पूर्ण समर्पण</u>** है।

- आप अपना जीवन खो देते हैं।(पद 24)
- अब यीशु हमसे कोई चीज़ अधिक मात्रा में नहीं लेता जिसे वह हमें अधिक मात्रा में न दे। यीशु हमें प्रेम करता है। वह हमें वो बनाने जा रहा है जिसकी परमेश्वर ने प्रथम पर चाहत की थी। ऐसा कुछ भी नहीं है जो इससे बढ़कर हो सकता हैं। परन्तु इसका अर्थ पूर्ण समर्पण है।

लूका 18:18—23 में हम एक धनी सरदार की कहानी पढ़ते है जो यीशु के पास आया था कोई भी उसे अपना चेला या चर्च का सदस्य बनाना चाहेगा और उसने कहा, ''यीशु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं।'' यीशु ने उत्त्र दिया कि आज्ञाओं को पालन कर उसने कहा, ''मैं कर रहा हूं।'' यीशु ने उसके दिल में देखा और कहा,''तू अपना सब कुछ बेच दे और गरीबों में बांट दे और मेरे पीछे हो ले।'' उस नौजवान ने अपना सिर पकड़ लिया और उदास होकर वहां से चला गया क्योंकि उसके पास बहुत धन समपति थी।

इस कहानी से हम क्या सीख सकते हैं?

- क्या हमें गरीब होने की जरूरत है? नहीं। यीशु मसीह तो केवल इतना कह रहा था कि ''कोई वस्तु उसके साथ प्रतिर्स्पधा नहीं कर सकती।''
- यीशु जानता था कि एक पुरूष के जीवन में धन सम्पति सबसे बड़े प्रतिर्स्पधक हैं
- हम शायद उस नौजवान के पीछे चले जाते, ''मात्र 50 फीसदी छोड़ दीजिए'' यीशु ने ऐसा नहीं किया। यीशु ने उससे कहा तू अपना जीवन तो खो देगा परन्तु मेरे जीवन को प्राप्त कर लेगा।
- जो कुछ प्रतिर्स्पधा करता है उसे जाना होगा ये हो सकता है नौकरी हो, मित्रता हो, आदत हो, जीवन शैली हो। जो कुछ प्रभु के प्रति पूर्ण दखल अंदाजी करता है उसे जाना होगा।

<u>कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा समर्पण की मांग</u>

डगलस हाईड अपनी पुस्तक ''अगुवे के लिए समर्पण'' में समर्पण के प्रति कम्युनिस्टों के विचारों का विवरण देते हैं।

एक कम्युनिस्ट ने कहा... ''यदि आप लोगों से थोड़ी सी मांग करते हैं तो आपको थोड़ा सा प्रत्युतर मिलेगा और आप इतने ही के योग्य हैं परन्तु यदि आप लोगों से बड़ी मांग करेंगे तो आपकों साहसपूर्ण प्रत्युतर मिलेगा।''

कम्युनिस्टों ने मसीही संस्थाओं की औसत में लोगों से बहुत अधिक मांग की। जबकि मसीही संस्थांऐं ऐसा करने की हिम्मत ही नहीं रखती।

यीशु मसीह बड़ी मांग को रखता है और वह इसके लिए मोलभाव नहीं करता। वह निरूत्साह भरी आधी पकी हुई मसीहत में रूची नहीं रखता इसकी बजाए वह ऐसे लोगों का समूह तैयार कर रहा है जो एक गुण भरे जीवन का प्रदर्शन करेंगे जो केवल परमेश्वर के पुत्र के प्रेम भरे प्रभुत्व के अन्दर जीवन यापन से सम्भव होता है।

**परिभाषाः परमेश्वर का राज्य :** उन सबों को मिलाकर बनता है जो चाहे मृत्यु के इस पार हों या व उस पार हों जो परमेश्वर के राज्य के अनुसार ठहराए गए हैं क्योंकि उन्होंने यीशु को अपना प्रभु मान लिया है।

''प्रभु'' के लिए युनानी शब्द =

**''कुरिओस''**

पूर्ण अधिकार
सर्वोच्च नियंत्रण करने वाला

तो यीशु को प्रभु करके धोषित करना धार्मिक सामान्य विवरण नहीं है। यह उसके सर्वोच्च अधिकार के प्रति न झुकने वाले रिशते को बतलाना है। यह इस बात का संकेत करता है कि –

**अपनी शर्तों पर जीवन का अन्त करना**

**लूका 6 : 23–26**

1. (पद 23) **स्वंयम् का इन्कार**

*''यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे तो अपने आपे का इन्कार करे ओर अपना क्रुस उठाकर मेरे पीछे हो ले''*

''नहीं, प्रभु'' परस्पर विरोधी है

2. ( पद 24) **सम्पूर्ण समर्पण**

*''...जो अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो उसे मेरी खातिर दे देगा वह उसे बचाएगा''।*

जवान धनी सरदार – लूका 18:18–23

हर एक बात जिसकी प्रतिर्स्पधा होती है, को चले जाना चाहिए! चाहे यह आधे समय की नौकरी, मित्रता, एक आदत, एक तरह की जीवन शैली या हमारी इच्छा की कोई चीज़ ही क्यों न हो जो हमारे सम्पूर्ण समर्पण पर दखल डालती है।

3. (पद 26) **जन घोषणा**

*''जो मुझसे और मेरे वचन से शर्माता है तो जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा उससे, अपने पिता और स्वर्ग दूतों के सामने शर्माएगा''* – (देखिए मत्ती 10:32–33)

तीसरी शर्त जो प्रभु यीशु ने हमारे साथ उसका सम्बंध होने के लिए रखी है वह **जन घोषणा** है।

- यदि तुम मेरा अंगीकार करोगे तो मैं तुम्हारा अंगीकार करूंगा। यीशु ऐसे अनुयायीयों को चाहता है जो हरेक को बता दे कि वे उसे अपना प्रभु करके मानते हैं।

- यदि यीशु हमाारी चर्चों को यह निमत्रंण देता है तो वह ऐसा कभी नहीं करेगा जैसा हम करते हैं ''...आईये अब हम अपने सिरों को झुका लें, अपने हाथों को उठा लें। हरेक इधर उधर देख रहा हो। ''यीशु मसीह ये कहेगा, ''हरेक सिर उपर हो जांए, हरेक इधर – ऊधर देखें, अब यदि कोई अपना जीवन मुझे देना चाहता है तो वह खड़ा हो जाए। और जो प्रत्युतर में खड़े हो जाऐंगे वे ही योग्य विश्वासी होंगे।''

- ''जो मुझसे और मेरे वचन से शर्माता है तो जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा उससे, अपने पिता और स्वर्ग दूतों के सामने शर्माएगा''

अब भीड़ की भीड़ यीशु के पीछे हो ली, परन्तु केवल थोड़े समय के लिए।

- जब वह चेलों के लिए शर्तों को निर्धारित करने लगा भीड़ कुछ लोगों मे घट गई।

- परन्तु यीशु इसी बात के पीछे था वह केवल उन्हीं लोंगों के पीछे था जो उसके समर्पित चेले होंगे। वह एक बड़ी भीड़ को नहीं ढुंढ रहा था।

- वह योग्य लोगों को ढुंढ रहा था जिनके द्वारा वह इस धरती पर अपने राज्य का निर्माण कर सके।

**परिभाषाः परमेश्वर का राज्य :** उन सबों को मिलाकर बनता है जो चाहे मृत्यु के इस पार हों या व उस पार हों जो परमेश्वर के राज्य के अनुसार ठहराए गए हैं क्योंकि उन्होंने यीशु को अपना प्रभु मान लिया है।

''प्रभु'' के लिए युनानी शब्द =

**''कुरिओस''**

पूर्ण अधिकार
सर्वोच्च नियंत्रण करने वाला

तो यीशु को प्रभु करके धोषित करना धार्मिक सामान्य विवरण नहीं है। यह उसके सर्वोच्च अधिकार के प्रति न झुकने वाले रिशते को बतलाना है। यह इस बात का संकेत करता है कि –

**अपनी शर्तों पर जीवन का अन्त करना**

**लूका 6 : 23–26**

1. (पद 23) **स्वंयम् का इन्कार**

*''यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे तो अपने आपे का इन्कार करे ओर अपना क्रुस उठाकर मेरे पीछे हो ले''*

''नहीं, प्रभु'' परस्पर विरोधी है

2. ( पद 24) **सम्पूर्ण समर्पण**

*''...जो अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा और जो उसे मेरी खातिर दे देगा वह उसे बचाएगा''।*

जवान धनी सरदार – लूका 18:18–23

हर एक बात जिसकी प्रतिर्स्पधा होती है, को चले जाना चाहिए! चाहे यह आधे समय की नौकरी, मित्रता, एक आदत, एक तरह की जीवन शैली या हमारी इच्छा की कोई चीज़ ही क्यों न हो जो हमारे सम्पूर्ण समर्पण पर दखल डालती है।

3. (पद 26) **जन घोषणा**

*''जो मुझसे और मेरे वचन से शर्माता है ता जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा उससे, अपने पिता और स्वर्ग दूतों के सामने शर्माएगा''* – (देखिए मत्ती 10:32–33)

इसलिए जब हम राजा के अधिकार में आ जाते हैं,तो रोमियों 14 हमें सपष्ट रूप से कहता हैः

- अब हम मरने और जीने में अपने अधिकारी नही रहे हैं।

- जब हम जीवित या जब हम मर जाते हैं तो दोनों अवस्थाओं में वह हमारे लिए जीया और मरा इसलिए हम उससे सम्बंधित हैं।

- इस राजा के प्रभुत्व और अधिकार में जो हमारा अधिकारी है एक आधीन होने वाली आत्मा हमारा स्वभाविक प्रत्युतर बन जाती है।

बाद में हम इस आधीन होने वाली आत्मा के बारे में और अधिक सीखेंगे। पर यहां पर परमेश्वर के राज्य में तीन अधिकार हैं जिनके प्रति हमें आधीन होना है :

- यह हमारे लिए स्वभाविक होना चाहिए कि हम **ईशवरीय अधिकार** — परमेश्वर के प्रति समर्पित हो जांए। याकुब 4 कहता है कि ''अपने आप को परमेश्वर को समर्पित कर दो।''

- यह भी हमारे लिए स्वभाविक होना चाहिए कि हम **आत्मिक अधिकार** के प्रति समर्पित हो जांए। इब्रानियों 13 में हमें आत्मिक अधिकारों —''जो हम पर शासन करते है उनकी आज्ञा मानो' के प्रति आधीन होन को कहा गया है।

- यह भी हमारे लिए स्वाभाविक हो जाना चाहिए कि हम **सांसारिक अधिकार** के प्रति आधीन हो जाए... बाइबल हमें संवैधानिक अधिकारियों के प्रति आधीन होने को कहती है परमेश्वर कहता है कि उसने इन सभी अधिकारियों की नियुक्ति की है और हमें उनके आधीन हो जाना चाहिए। इसीलिए पहले पतरस में कहा गया है कि अपने आप को प्रभु के कारण प्रभु की ओर से निर्धारित किए गए लोगों के आधीन कर दो।

जब यीशु हमारा प्रभु बन जाता है तो एक आधीनता की आत्मा हममें बढ़ने लगती है. ... परमेश्वर के लिए, आत्मिक अधिकारियों के लिए, और यहां तक कि हमारे चारों और संसारिक अधिकारियों के लिए।

**राजा की आधिनता में**

*हममें से ना तो कोई अपने लिए जीता है और ना कोई अपने लिए मरता है...यदि हम जीवित हैं तो प्रभु के लिए जीवित है और यदि मरते हैं तो प्रभु के लिए मरते हैं तो हम जिएं या मरें हम प्रभु ही के हैं, क्योकि मसीह इसलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों दोनों का प्रभु हो* – रोमियों 14:7–9

1. **अधिनता** की एक आत्मा निम्न बातों के लिए स्वाभाविक उत्तर बन जाती है:

   – **ईशवरीय** ..... अधिकार

   *इसलिए परमेश्वर को समर्पित हो* – याकूब 4:7

   – **आत्मिक** ..... अधिकार

   *जो तुम पर अधिकार रखते हैं उनकी आज्ञा का पालन करो* – इब्रानियों 13:17

   – **सांसारिक** ..... अधिकार

   *प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक के प्रबन्ध के आधीन में रहो* – 1पतरस 2:13

2. हमारे सारे रास्ते राजा की अधीनता में आ जाते हैं जैसे :

   – हम किससे विवाह करते हैं
   – हम कैसी नौकरी करते है
   – हमारे कौन से मित्र है
   – हमारे जीवन में क्या उद्धेश्य होना चाहिए
   – हम अपना पैसा कैसे खर्च करते हैं
   – हम अपने फालतू समय में क्या करते हैं

3. हमारी लगातार प्रार्थना मती 6:10 में तबदील हो जाती है:

   *''प्रभु, मेरी नहीं पर तेरी मर्जी पूरी हो। जो भी महत्वपूर्ण चीज इस पृथ्वी पर मेरे जीवन में होती है वह तेरे राज्य में स्थापित हो।''*

हमारे सभी रास्ते उसके आधीन हो जाते हैं :

- हमने किससे विवाह करना है। यह हमारे लिए एक चुनाव बन जाता है जो हम उसके पास ले आते हैं और वह इस चुनाव में शामिल हो जाता है।

- किस नौकरी को हम करना चाहते हैं। किस दिशा हमारी नौकरी हमें ले चलती है।

- हमारे मित्रों में कौन–2 होते हैं।

- हमारे जीवन के उद्धेश्य क्या होने चाहिए। हम अपना धन किस तरह खर्चते है।

- हम अपने खाली समय में क्या करते है।

हमारे जीवन का हर पहलू राजा की आधीनता में आ जाता है

यीशु ने कहा कि हमारी नियमित प्रार्थना यह होनी चाहिए,''हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र माना जाए... ''इसके बाद क्या आना चाहिए? ''तेरा राज्य आए!'' किसकी इच्छा? ''तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में होती है धरती पर भी हो''

यह एक क्रातिकारी प्रार्थना है! यीशु ने कहा हमें रोजाना... यानि प्रतिदिन यह प्रार्थना करनी चाहिए। प्रभु मेरी नहीं परन्तु तेरी, तेरी इच्छा पूरी हो जाए...

हजारों में से जितनों ने यीशु को सुना वे उसका अनुसरण करने लगे उन्हें उसने भोजन खिलाया, वे उसके द्वारा चंगे किए गये, उन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा... परन्तु अन्त में केवल 120 रह गए! ये 120 उसकी मृत्यु और जी उठने के बाद धरती पर उसके राज्य के निर्माण में लग गए।

यही है वह शुभ संदेश...प्रभु यीशु मसीह का शुभसंदेश।

इसी के लिए वह मुझे और आपको बुला रहा है। इसके लिए हमें अपना सब कुछ आधीन कर देना होगा, परन्तु यही हमारा सबसे उत्तम निवेश होगा जिसे कभी हमने जीवन में किया हेागा।

## राजा की आधिनता में

*हममें से ना तो कोई अपने लिए जीता है और ना कोई अपने लिए मरता है...यदि हम जीवित हैं तो प्रभु के लिए जीवित है और यदि मरते हैं तो प्रभु के लिए मरते हैं तो हम जिएं या मरें हम प्रभु ही के हैं, क्योकि मसीह इसलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों दोनों का प्रभु हो* – रोमियों 14:7–9

1. **अधिनता** की एक आत्मा निम्न बातों के लिए स्वाभाविक उत्तर बन जाती है:

   – **ईशवरीय** ..... अधिकार

   *इसलिए परमेश्वर को समर्पित हो* – याकूब 4:7

   – **आत्मिक** ..... अधिकार

   *जो तुम पर अधिकार रखते हैं उनकी आज्ञा का पालन करो* – इब्रानियों 13:17

   – **सांसारिक** ..... अधिकार

   *प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक के प्रबन्ध के आधीन में रहो* – 1पतरस 2:13

2. हमारे सारे रास्ते राजा की अधीनता में आ जाते हैं जैसे :

   – हम किससे विवाह करते हैं
   – हम कैसी नौकरी करते है
   – हमारे कौन से मित्र है
   – हमारे जीवन में क्या उद्धेश्य होना चाहिए
   – हम अपना पैसा कैसे खर्च करते हैं
   – हम अपने फालतू समय में क्या करते हैं

3. हमारी लगातार प्रार्थना मती 6:10 में तबदील हो जाती है:

   *''प्रभु, मेरी नहीं पर तेरी मर्जी पूरी हो। जो भी महत्वपूर्ण चीज इस पृथ्वी पर मेरे जीवन में होती है वह तेरे राज्य में स्थापित हो।''*

1. कुलुसियों 1:13—14 के अनुसार यीशु को अपने जीवन को क्रुस पर देने का महिमामय परिणाम क्या हुआ ?

2. यदि पूर्ण गम्भीरता से मती 6:10 की प्रार्थना की जाए तो क्यों यह एक क्रांतिकारी प्रार्थना हो जाती है?

3. आप ''प्रमाणित सुसमाचार'' को कैसे देखते हो, जिसे यीशु ने प्रचार किया यह कैसे आज के कुछ समुदायों के प्रचार से भिन्न है?

4. लूका 14:25—33 में यीशु उनको जो उसके पीछे चलना चाहते हैं उनको क्या सलाह देता है?

5. यीशु के पीछे चलने के लिए आपको क्या बलिदान करना पड़ेगा?

6. रोमियों 14:7—9 पढ़ने के बाद वर्णन करें कि विश्वासी का सम्बन्ध मसीह के साथ कैसा होना चाहिए?

**प्रथम**

(1) अधिवेशन 1 के प्रश्न पत्र को जल्दी से पढ़ लें। आप उत्तर दे सकते हैं जिससे कि आपके समूह के सदस्य अपने उत्तरों की जांच कर सकें या आप समूह के अन्य सदस्यों को इसका उत्तर देने दें। यदि उनके पास कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है तो अधिक समय बिताना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी।

(2) प्रश्न पत्र को पुनः पढने से उनको गृहकार्य करने की आदत में मदद मिलेगी। हर प्रश्न को पढ़ना यह जानने में मदद करता है कि आप जान सकें आपके समूह के सदस्य अपनी समझ में ''कहां'' हैं।

**प्रारम्भ करने का अच्छा तरीका**

(1) (यदि पिछले सप्ताह ये आपको नहीं मिला, तब इसे प्रयोग करें)
*''अपनी जान पहचान में ऐसे व्यक्ति का वर्णन करें जो सच्चाई से यीशु मसीह से प्रेम करता है''*

(2) या — इस पर सीधे जाईयेः
*''आप कलीसिया में क्या देखते हो जिससे आप प्रसन्न हो जाते हो और जिससे आप उदास हो, जाते हो उसे बांटिए।''*

**अब** — हो सकता है कि आप आज रात को शिक्षा के विषय में कुछ प्रश्न नीचे दिये गए है चर्चा के लिए उठाएं:

1. ''आधा—सुसमाचार'' ग्रहण करने में क्या खतरा है?

2. लूका 18:18—23 में यीशु उस धार्मिक व्यक्ति से चाहजा था, कि उसके पीछे चलने से पहले अपना क्यूं सब कुछ बेच दे? आप क्या सोचते हो कि क्या हम में से हर एक को ऐसा करना चाहिए?

3. चर्चा करें कि एक व्यक्ति को प्रभु यीशु को अपना प्रभु बनाने में व्यवहारिक रूप से कया अर्थ होगा? कौन सी चीज़ों को बदलना होगा—जब वह नियंत्रण में है?

**अगले सप्ताह के लिए**

अपने समूह के सदस्यों को अधिवेशन 2 के प्रश्न पत्र को पूरा करने हेतु प्रोत्साहित करें और कहें कि वे इसे अगले अधिवेशन में अपने साथ लेकर आऐं।